कलीसिया में औरत की भूमिका

बाइबल के अनुसार इस संसार में स्त्रियां नई नहीं हैं। पुराने नियम में, स्त्री को परमेश्वर की *विशेष* सृष्टि माना जाता था। अदन की वाटिका में पाप करने के बाद, स्त्री को बताया गया था कि वह अपने पति के अधीन रहेगी। अभी भी परमेश्वर के प्रबन्ध में स्त्रियों को सज़्मान दिया जाता था। बहुविवाह व छोटी मोटी बातों पर तलाक करके परमेश्वर ने नहीं बल्कि मनुष्य ने स्त्री का अपमान किया है।

नये नियम में हम देखते हैं कि स्त्रियों के लिए परमेश्वर के सज़्मान का स्थान यीशु फिर से बहाल कर देता है। (विशेष तौर पर लूका की पुस्तक पर और स्त्रियों के प्रति दिखाए गए सज़्मान की ओर ध्यान दें।) यीशु क्रूस पर सबके लिए मरा। उसकी मृत्यु से स्त्री के सज़्मान के बहाल होने की प्रक्रिया पूरी हो गई। क्रूस के कदमों में आकर भूमि समतल हो जाती है (गलतियों 3:26–28)।

यहां आरज़्भिक कलीसिया में स्त्रियों के काम के कुछ उदाहरण हैं: पुरुषों के साथ – साथ स्त्रियों को भी सताया जाता था और वे सुसमाचार को फैलाने में उनकी सहायता करती थीं (प्रेरितों 8:3)। प्रिसकिल्ला ने अपुल्लोस को सच्चाई का ज्ञान और भी अच्छे ढंग से पाने में सहायता की थी (प्रेरितों 18)। फिलिप्पुस की चार पुत्रियों को भविष्यवाणी करने का दान मिला था (प्रेरितों 21:9)। रोमियों 16 अध्याय में कई स्त्रियों का उल्लेख है जो कलीसिया में काम करती थीं, जिनमें कलीसिया की सेविका और पौलुस की सहकर्मी फीबे भी थी (रोमियों 16:1, 2)। मसीही स्त्रियों को कहीं – कहीं पुरुषों की तरह आश्चर्यकर्म करने के दान मिलते थे (देखिए 1 कुरिन्थियों 12–14; ध्यान दें 1 कुरिन्थियों 11:5)। यूओदिया और सुन्तुखे सुसमाचार के प्रचार में पौलुस के कंधे से कंधा मिलाकर परिश्रम करती थीं (फिलिप्पियों 4:2, 3)।

परन्तु इनमें से किसी ने भी उत्पज़ि 3 अध्याय में दी गई परमेश्वर की मूल व्यवस्था को नहीं बदला कि *पुरुष* अगुआई करें अर्थात पति/पत्नी के सज़्बन्ध में सिर पुरुष है (इफिसियों 5:22–24, 33; 1 पतरस 3:1, 5)। कलीसिया में अगुआई का काम पुरुषों का है; पवित्र आत्मा की दी हुई योग्यताएं स्त्रियों को ऐल्डर बनने के योग्य नहीं ठहरातीं (वह ''एक ही पत्नी का पति'' नहीं हो सकता)। आराधना में अगुआई देने का काम पुरुषों का है (1 कुरिन्थियों 14; 1 तीमुथियुस 2)।

आज कुछ महिलाएं परमेश्वर की इच्छा से आगे बढ़ गई हैं (2 यूहन्ना 9)। बहुत सी साज़्प्रदायिक कलीसियाओं में स्त्रियों को प्रचारक नियुज़्त किया गया है। यदि हम सतर्कता नहीं बरतते तो यह बुराई कलीसिया पर असर डाल सकती है।

विचार करने के लिए आयतें

गलतियों 3:26–28 को वे लोग जो यह मानते हैं कि कलीसिया में स्त्रियों को अगुआई का काम करना चाहिए, मुज़्य आयतें मानते हैं। परन्तु यह पति/पत्नी के सज़्बन्धों और माता – पिता/बच्चों के सज़्बन्धों जैसे परमेश्वर द्वारा दी गई बुनियादी भूमिकाओं को नकारता नहीं है। उदाहरण के लिए मेरी सारी बेटियों ने छोटी उम्र में ही सुसमाचार को मान लिया था। ज़्या इसका अर्थ यह था कि उन्हें अब मेरी आज्ञा मानने की आवश्यकता नहीं है ज़्योंकि यीशु में हम सब बराबर हैं?

एक हवाला जिस पर विचार किया जाना चाहिए वह है 1 कुरिन्थियों 14:34, 35: ''स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहें, ज़्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं।'' इस हवाले की पृष्ठभूमि आश्चर्यकर्म के दानों के दुरुपयोग से कुरिन्थुस की मण्डली की आराधना में पाई जाने वाली गड़बड़ी है। इस समस्या का सामान्य समाधान यह था: ''पर सारी बातें सज़्यता और क्रमानुसार की जाएं'' (आयत 40)। पौलुस ने इसे पूरा करने के लिए कई नियम बताए। छठा नियम स्त्रियों के लिए चुप रहने का था।

आयत 40 मण्डली के लिए लिखी गई थी; कलीसिया आराधना के लिए इकट्ठी होने के लिए आ रही थी (19, 23, 26, 28 आयतों पर ध्यान दें; ''कलीसिया'' [*एकलेसिया*] का अर्थ यहां ''सभा'' है)। ''चुप रहें'' यूनानी शज़्द *sigao* का अनुवाद है जिसका अर्थ पूरी तरह से शांत होना है।[1]

एक और महत्वपूर्ण हवाला 1 तीमुथियुस 2:11–14 है, जिसमें 1 कुरिन्थियों 14 की कई समानताएं हैं। सामान्य विषय आराधना, विशेषकर प्रार्थना है (आयतें 1, 8)। आयत 12 में शिक्षा देने का भी उल्लेख है। ज़ोर *पुरुषों* के *जगह* प्रार्थना करने पर है, जिससे स्पष्ट होता है कि स्त्रियां प्रार्थना नहीं कर सकतीं। (1 कुरिन्थियों 1:2 में ''हर जगह'' का इस्तेमाल *मसीही* ''जगहों'' के लिए किया गया है।) ध्यान दें कि आयत 8 का शज़्द ''पुरुष'' *aner* से निकला है (जो कि स्त्री के विपरीत पुरुष के लिए है) न कि *anthropos* (मनुष्यजाति के लिए सामान्य शज़्द, जिसका इस्तेमाल 1, 4, 5 आयतों में हुआ है)। फिर सामान्य स्थिति सार्वजनिक स्थान को कहा गया है: ''पवित्र हाथों को उठाकर'' मन में ऐसी मण्डली की तस्वीर ले आता है जो परमेश्वर के सामने हाथ उठाकर कोई अगुआ करता है, और फिर मण्डली पर आशीष देने की बात करता है। फिर यहां पर स्त्रियों के चुप रहने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया है (आयत 12)। उपदेश न देने की बात दूसरी जगहों पर पौलुस की अपनी शिक्षा के विरुद्ध नहीं होगी: ज़्योंकि कुछ परिस्थितियों में स्त्रियां उपदेश दे सकती हैं (तीतुस 2:3, 4 आदि)।

परन्तु 2 तीमुथियुस, 1 कुरिन्थियों 14 की आयतों से अधिक सामान्य है। इसमें *व्यवहार*

पर अधिक ज़ोर दिया गया है। इस भाग में "चुप" 1 कुरिन्थियों 14 अध्याय वाले शज़्द से अलग शज़्द से अनुवाद किया गया है। यह *hesuchia* से किया गया है जो व्यवहार, मन, स्वभाव की अनुपस्थिति की बात अधिक नहीं है। इसका अनुवाद "शांति" या "चुपके से" (देखिए NASB, NIV; *वाइन'स ऐज़्सपोज़िटरी डिज़्शनरी ऑफ़ न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* में *hesuchia* देखिए)। यह 1 तीमुथियुस 2:2 में विश्राम और चैन के साथ जीवन और 2 थिस्सलुनीकियों 3:12 में मसीही लोगों को चुपचाप रहकर काम करने का आग्रह करने के लिए इस्तेमाल किया गया शज़्द है। "आज्ञा चलाना" शज़्द जोड़ा गया है, इसका अनुवाद यूनानी शज़्द authenteo से हुआ है और इसका अर्थ "पर अधिकार रखना" या "अधिकार चलाना" है (देखिए NASB, NIV)। यह "usurped" authority अर्थात "जबरदस्ती अधिकार" ही नहीं जैसा कि KJV से संकेत मिलता है बल्कि सामान्य रूप में दूसरे पर अधिकार करना है। (एक स्त्री प्रचार नहीं कर सकती है चाहे ऐल्डर उसे ऐसा "अधिकार" देने की कोशिश भी करें। ज़्योंकि "अधिकार के साथ" [तीतुस 2:15] प्रचारक ही बोलता है, इसलिए उस पद को स्त्री नहीं भर सकती।) सामान्य प्रासंगिकता बनाने के लिए, जब किसी मण्डली में स्त्रियों को बोलने की पवित्र शास्त्र से अनुमति भी हो, तो भी उन्हें चाहिए कि वे कुछ हद तक अधीनता दिखाएं।

ध्यान दें कि पौलुस ने न केवल अपने समय की रीतियों की ओर ध्यान दिलाया बल्कि वह उत्पज़ि की पुस्तक के पहले अध्यायों और हर युग के परमेश्वर के प्रबन्ध की ओर वापस गया।

आइए अब संक्षेप में व्यावहारिक बात करते हैं। स्त्रियों को विशेष तौर पर सार्वजनिक सभाओं में अगुआई नहीं करनी थी, इसके अलावा वे सामान्यतया पुरुषों पर "अधिकार" नहीं रखती थीं (1 कुरिन्थियों 11:2-16)। दूसरी ओर, स्त्रियां अपने दानों या गुणों का इस्तेमाल अधिक *प्राइवेट* जगहों पर करती थीं (प्रिसकिल्ला, प्रेरितों 18:24-26; फिलिप्पुस की बेटियां, प्रेरितों 21:8, 9)। प्रश्न यह है कि "आराधना सभाओं और व्यज़्तिगत परिस्थितियों *के बीच* सब स्थितियों में स्त्रियों को कैसा व्यवहार रखना चाहिए?" एक सामान्य सिद्धांत है: जितना वे "आराधना" के करीब होंगी उतना ही उन्हें चुप रहना चाहिए। जितना वे "व्यज़्तिगत" होंगी उतना ही उन्हें बोलने का अधिकार है। इस सिद्धांत से सारी समस्याओं का समाधान तो नहीं होगा, परन्तु यह एक शुरुआत है।

मूल आयतों को छोड़ने से पहले, आइए "डीकनेसों" अर्थात सेविकाओं के बारे में उठाए गए कुछ लोगों के प्रश्नों का उज़र दें (रोमियों 16:1, 2)। ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि प्रारज़्भिक कलीसिया में डीकनेस या सेविका के पद के नाम से कोई "पद" हो। जहां तक मुझे मालूम है, नये नियम में केवल रोमियों 16 अध्याय में ही किसी स्त्री के लिए "डीकन" शज़्द इस्तेमाल किया गया है।

याद रखें कि नये नियम में बहुत से शज़्दों का इस्तेमाल सामान्य या विशेष दोनों अर्थों में किया जा सकता है जैसा कि "कलीसिया," "ऐल्डर," "यीशु" आदि। सामान्य अर्थ में "डीकन" का अर्थ केवल "सेवक" है। इस सामान्य अर्थ में, यह शज़्द प्रचारकों और सब मसीही लोगों पर लागू होता है। "डीकनेस" का मूल अर्थ "सेविका" है। *सामान्य* अर्थ में,

हमें कलीसिया में वेतन पाने वाली और अवैतनिक "सेविकाएं" मिल जाती हैं जो बाइबल क़्लास टीचर, कलीसिया की सचिव, बीमारों को भोजन ले जाने वाली होती हैं।

बाइबल के साथ संतुलन बनाए रखने के लिए कुछ सुझाव

1. *आइए हम वही शिक्षा दें जो इस विषय पर बाइबल कहती है।*

2. *अपने पुरुषों को सिखाएं कि वे अगुआई करें।* किसी ने कहा है कि हमारी सबसे बड़ी समस्या आगे आने की स्त्रियों की इच्छा उतनी नहीं जितनी पुरुषों की वैसे अगुआई न करने की है जैसे उन्हें करनी चाहिए।

3. *अपनी महिलाओं को शिक्षित करने को कभी नज़रअन्दाज न करें।* उन्हें प्रार्थना करने व शिक्षा देने आदि में सक्षम होना चाहिए। उन्हें सीखना चाहिए कि अपने तोड़ों के अच्छे भंडारी कैसे बनना है। घर से ही इस शिक्षा की शुरुआत होनी चाहिए। कलीसिया में परमेश्वर का भय मानने वाली स्त्रियां इस शिक्षा में सहायता कर सकती हैं (तीतुस 2)।

4. *बाइबल के इन बुनियादी सिद्धांतों को तोड़े बिना आइए हम गंभीरतापूर्वक इस पर विचार करें कि स्त्रियों के हर न्यायसंगत तोड़े का इस्तेमाल कैसे करना है।* हमें कलीसिया की आवश्यकताओं से सज़्बन्धित स्त्रियों के *सुझाव* चाहिए। हमें स्त्रियों के *गुणों* की आवश्यकता है। ऐसी बहुत सी मण्डलियां हैं जिन्हें मैं जानता हूं कि जो काम वे कर रही हैं वह उन स्त्रियों के बिना नहीं किया जा सकता था जिन्होंने उनमें काम किया है!

सारांश

कलीसिया के सामने संसार जैसा बनने के लिए बहुत सी चुनौतियां आएंगी। परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम अपनी शिक्षाओं और रीतियों में बाइबल में बने रहें। परमेश्वर अपनी कलीसिया के साथ हो!

डेविड रोपर

पाद टिप्पणी

[1]बाइबल बार – बार हमें सामान्य निर्देश देती है कि कहीं – कहीं हमें अपवाद मिले हैं। उदाहरण के लिए, हमें देश के कानून का पालन करना चाहिए (रोमियों 13) लेकिन जब पतरस को आज्ञा मिली कि अब प्रचार करना बन्द कर दे, तो उसने कहा, "मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्ज़व्य कर्म है" (प्रेरितों 5:29)। ज़्या इसमें कोई अन्तरविरोध है? नहीं, नियम यही है कि "देश के कानून का पालन" किया जाए। अपवाद यह है कि "... जब तक वे नियम परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन न करते हों।" 1 कुरिन्थियों 14 में हमें एक सामान्य सिद्धांत मिलता है कि आराधना सभा में स्त्रियों को चुप रहना चाहिए। गाने के बारे में मिलने वाली आयतों में एक अपवाद मिलता है ज़्योंकि हर मसीही को गाने की आज्ञा है (कुलुस्सियों 3:16)। दूसरों के सामने अंगीकार करने के बारे में दी गई आयतें एक अपवाद हैं ज़्योंकि यह अंगीकार सबके लिए ज़रूरी है। (रोमियों 10:9, 10; 1 तीमुथियुस 6:12; मज़्ी 10:32)।

मसीही लोगों की उदारता से ट्रुथ फ़ॉर टुडे वर्ल्ड मिशन स्कूल बिना कोई कीमत लिए ये पुस्तकें आपको उपलज़्ध करवा सका है। अपनी mailing list को अपडेट करने के लिए हमें आपसे निज़्न जानकारी चाहिए।

यह पुष्टि करने के लिए कि आपकी जानकारी अभी भी सही है, कृपया हमें साल में कम से कम एक बार अवश्य लिखें कि ज़्या आपको यह सामग्री लगातार सही पते पर मिल रही है और आपके लिए कैसे सहायक हो रही है। आपकी सेवकाई में परमेश्वर आपको आशीष दे।

एक पर टिक करें: ☐ पुरुष ☐ स्त्री

(नोट: सज़्भव हो तो पता अंग्रेज़ी के बड़े अक्षरों में लिखें)

नाम: ____________________

पूरा पता: ____________________

____

____________________ PIN __________

पुराना पता (पता बदलने की स्थिति में): ____________________

____

____

____________________ PIN __________

ई-मेल पता: ____________________

कलीसिया का नाम: ____________________

स्थान: ____________________

प्रचारक का नाम: ____________________

जिस मण्डली में आप आराधना करते हैं, वहां आपकी सेवा ज़्या है ?

☐ प्रचारक ☐ सदस्य

☐ बाइबल ज़्लास टीचर ☐ सदस्यता नहीं

ज़्या आपको ट्रुथ फ़ॉर टुडे वर्ल्ड मिशन स्कूल का साहित्य लगातार मिल रहा है ? (एक पर टिक करें):

☐ नहीं

☐ हां, डाक से

☐ हां, श्री ____________________ के पास से।

आप किस भाषा में पुस्तकें पाना चाहेंगे ? (केवल एक ही टिक करें):

☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ तेलुगू ☐ अंग्रेज़ी

आप इस सामग्री का इस्तेमाल कैसे करते हैं/करेंगे ? ____________________

____

यदि आप ऐसे व्यज़्तियों को जानते हों जो इस सामग्री को लगातार प्राप्त करना चाहते हैं, तो कृपया इस फार्म की कापी करवाकर उनके नाम से यह फार्म Truth for Today, P.O. Box 44, Chandigarh - 160017 के पते पर भेज दें।